अध्याय – द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

प्रस्तुत अध्याय मे वर्तमान शोध कार्य से सबधित पूर्व मे हुए शोध कार्यों एव साहित्य का पुरावलोकन किया गया है । प्राथमिक कक्षाओ मे गणित दक्षता उपलब्धियों एव चयनित क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों पर विशेष शोध कार्य के अभाव में उनसे सबधित साहित्य एव शोध कार्यों का सक्षिप्त पुनरावलोकन निम्न प्रकार से है ।

दास (1968) "कक्षा 4 के विद्यार्थियो के गणित उपलब्धि स्तर पर उपचारात्मक शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया" । इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य कक्षा 4 के विद्यार्थियों पर गणित के उपचारात्मक शिक्षा के प्रभावका निर्धारण करना था । इस अध्ययन से निष्कर्ष निकला कि कक्षा 4 में गणित के उपलब्धि स्तर पर उपचारात्मक शिक्षण का सार्थक प्रभाव पाया जाता है ।

ओझा (1979) हाई स्कूल के बच्चो की गणित शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक आर्थिक स्तर के सहसबध का अध्ययन किया गया । इस अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अच्छी होती है । ग्रामीण एव शहरी छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि माता – पिता को शिक्षा, व्यवसाय एव आय से सबधित है ।

जैन (1979) के शोध परिणामो के अनुसार हाई स्कूल स्तर पर गणित अधिगम को प्रभावित करने वाले कारण बुद्धिमत्ता, अमूर्त तर्क शक्ति, सख्यात्मक योग्यता, गणितीय पृष्ठभूमि, अभिप्रेरणा की मात्रा, अध्ययन के घंटे आदि है ।

शर्मा (1981) ने असम राज्य के महा विद्यालयों के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि का आलोचनात्मक अध्ययन किया । उपयुक्त की मुख्य उपलब्धियाँ रही –

LIBRARY
Bhopal

- लडको की उपलब्धि लड़कियो की अपेक्षा अच्छी थी ।
- अभ्यास कार्य की कमी, मूलभूत ज्ञान का अभाव, शाब्दिक कथनों को गणितीय कथनो मे रूपातरित करने मे अक्षमता इत्यादि मुख्य कमजोरियाँ थी।

राजपूत (1984) ने विषय "स्टडी ऑफ एकेडमिक एचीवमेट ऑफ स्टूडेन्ट इन मेथमेटिक्स इन रिलेख़न टू वेयर इटेलीजेन्स एचीवमेट मोटीवेशन एड सोशो इकानामिक्स स्टेट्स" पर अश्ययन मे 270 विद्यार्थियो को शामिल किया । इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कक्षा पाचवी में गणित विषय का मानकीकृत परीक्षण तैयार करना । वृद्धि, उपलब्धि, अभिप्रेरणा की विभिन्नतायें तथा सामाजिक आर्थिक स्थिति का छात्रो की उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना था । इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित है ।

1) सभी स्तरो पर गणित विषय उपलब्धि पर बुद्धि का सार्थक प्रभाव पाया गया ।
2) सामान्य कक्षा परिस्थितियो मे उपलब्धि अभिप्रेरणा का गणित विषय मे उपलब्धि पर सार्थक नही पाया गया ।
3) सामाजिक आर्थिक स्तर का छात्रों की उपलब्धि पर प्रभाव देखा गया ।

जैन एवं बुराद (1988) :-

राजस्थान के सेकेण्डरी स्कूल के छात्रो मे गणित विषय में निम्न परिणाम होने के लिये उत्तरदायी कारक इस प्रकार है ।

1) शिक्षक की विलम्ब से नियुक्ति एवं शिक्षको का बार-बार स्थानान्तरण तथा शिक्षको की अनुपलब्धता ।
2) कक्षा कक्ष, श्यामपट और अन्य भौतिक सुविधाओं मे कमी ।
3) छात्रो की अनियमित उपस्थिति ।
4) विद्यार्थियों की निचली कक्षाओ मे निम्न मानक स्तर ।
5) पाठ्यपुस्तको की अनुपलब्धता ।
6) गृह कार्य व समय मे अनुचित संबंध ।

National Institute of Education LIBRARY Bhopal

दवे (1988) ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण परिषद के "डिपार्टमेंट आफ प्री स्कूल एण्ड एलीमेन्ट्री एजुकेशन" के अतर्गत यूनिसेफ के सहयोग से अरूणाचल प्रदेश को छोडकर सभी राज्यो एव केन्द्र शासित क्षेत्रो के 2489 विद्यालयो मे प्राथमिक स्तर पर छात्रो की उपलब्धि का अध्ययन किया और उन्होने पाया कि कक्षा 1 और 2 मे गणित का उपलब्धि स्तर कक्षा 3 की अपेक्षा अच्छा है , लेकिन कक्षा 4 मे यह स्तर कक्षा 3 के स्तर से अच्छा है । यह उपलब्धियाँ विभिन्न राज्यो तथा केन्द्र शासित क्षेत्रो मे भिन्न है ।

चेल (1990) ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियो की गणित विषय में निम्न उपलब्धता (Under achievement) का पश्चिमी बगाल मे अध्ययन किया, उन्होंने उपलब्धता के कारक बताए – संप्रत्यय के ज्ञान मे अतर, गणितीय भाषा को समझने मे कठिनाई, शिक्षण मे खुलेपन और लचीले पन की कमी, शाब्दिक समस्याओ को गणितीय निरूपण मे कठिनाई, गणितीय परिणामो की विवेचना मे कठिनाई , गणित का अमूर्त व्यवहार, छात्रो मे विषय के प्रति भय और चिंता ।

सरला (1990) मे माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आधुनिक गणित के चयनित क्षेत्रो सप्रत्यात्मक त्रुटियो का विश्लेषण किया और कई त्रुटियाँ बहुत बड़ी थी जो कि लिंग, विद्यालय परिवेश, विद्यालय प्रशासन, बुद्धिमतता, पढ़ने की आदत, सामाजिक आर्थिक स्थिति से प्रभावित थी , बुद्धिमतता के साथ – साथ त्रुटियाँ कम हो जाती है ।

थिण्ड (1990) ने यह पाया कि सामाजिक वैयक्तिक कारक जैसे कि पिता की शिक्षा एव व्यवसाय या माता की शिक्षा और व्यवसाय का विद्यार्थियों की गणित में समस्या समाधान योग्यता मे कोई सार्थक प्रभाव नहीं है । जबकि माता की शिक्षा का कक्षा 7 वीं तथा 9 वी के विषय में समस्या समाधान योग्यता का सार्थक प्रभाव पाया गया ।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

प्रभा (1992) ने पाया कि गणित अधिगम मे अभिक्रमित अध्ययन की प्रभावकता उन छात्रो पर अधिकतम होती है जिनकी माताए सेवारत होती है, इसके साथ ही गणित अधिगम को परिवार की आय तथा जाति भी प्रभावित करती है ।

सैफिया (1992) ने पाया कि तेज, औसत एव मद गति से सीखने वाले छात्रो की बुद्धिमतता मे सामाजिक आर्थिक स्तर, व्यक्तित्व एव समायोजन के सापेक्ष सार्थक अतर पाया जाता है । सभी गति से सीखने वाले छात्र आधुनिक गणित मे एक समान उपलब्धि प्राप्त करते है । उन्होने बताया कि गणित मे छात्रो की उपलब्धि एव सामाजिक आर्थिक स्थिति तथा व्यक्तित्व से वास्तविक सहसबध है, के बारे मे अध्ययन करना उपयोगी होगा ।